शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Aproved Journal No. 40908

कला सृजन एवं प्रविधियाँ – एक सर्वेक्षण

डॉ0 किरण प्रदीप
अध्यक्षा, विसुअल आर्ट, ड्राइंग एंड पेंटिंग विभाग, कनोहर लाल स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, मेरठ

सारांश

कलाकार जब चित्र रचना करता है तो वह किसी न किसी प्रविधि का आश्रय लेता है। रचनाकार की चित्र रचना की यह प्रविधि तकनीक कही जाती है। प्रत्येक कलाकार की तकनीक व्यक्तिगत होती है जिसे वह सतत् अभ्यास से प्राप्त करता है। जैसे कवि के लिए, शब्दों एवं छन्द शास्त्र का ज्ञान आवश्यक है उसी प्रकार कलाकार का तकनीकी व्याकरण का ज्ञान कलाकृति को विशिष्ट बनाता है। व्यापक रूप से देखें तो प्रविधि रचना सम्बन्धी वह प्रक्रिया है जिसे किसी निश्चित विचार के आधार पर प्रयुक्त करते हैं। प्रत्येक कला अपने काल के अनुसार विविध माध्यमों तथा प्रविधियों को जन्म देती है। इन सभी प्रविधियों को कलाकार विभिन्न प्रकार के रंगों एवं माध्यमों के साथ प्रयोग करता आया है, जो भी माध्यम कलाकार को मिला उसी के अनुसार रचना कर उसने आत्माभिव्यक्ति की है। चित्रकार ने जब आदिकाल में चित्रण प्रारम्भ किया तब उस समय माध्यमों का अभाव था किन्तु फिर भी सीमित साधनों से उसने कोयला .जली लकड़ी अथवा मिट्टी के रंगों को सिल पर पीस कर चित्रण योग्य बनाया। उस समय मानव के पास आजकल की भांति या कागज कैनवास आदि नहीं थे, आधुनिक तैल रंग, ऐक्रेलिक या अन्य माध्यम भी नहीं थे, जो आज हैं, तब उसने मिट्टी के रंगों में जल, अंडा या गोंद मिलाकर भित्तियों पर रचना की। इस परम्परा से भारत में रंगों को कुछ विशेष विधि से तैयार किया जाने लगा।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:

डॉ0 किरण प्रदीप,

कला सृजन एवं प्रविधियाँ – एक सर्वेक्षण,

शोध मंथन, दिस0 2017,
पेज सं0 95–100,
Artcile No. 16 (SM 656)

http://anubooks.com/
?page_id=581

साठ के दशक में एक नारा 'माध्यम ही सन्देश है' कला जगत् में प्रचलित हुआ। यहीं से आधुनिक कलाकार अभिव्यक्ति में माध्यम एवं तकनीक को प्रमुखता देकर नवीन प्रयोग करने लगे। प्रत्येक कलाकार को आत्माभिव्यक्ति हेतु अपने माध्यम के प्रयोग की विधि तथा सम्भावनाओं का ज्ञान होना आवश्यक है जिसके अभाव में कलाकार न तो कुशलतापूर्वक चित्रण कर सकता है न कलात्मक सृजन। भारतीय शिल्प शास्त्रियों ने भी अपने ग्रन्थों में कलाकार के लिए प्रविधियों तथा माध्यमों का ज्ञान आवश्यक माना है तथा साथ ही साथ टेम्परा, फ्रेस्को आदि के चित्रण की प्रविधियां भी बतायी हैं। धीरे–धीरे मानव के विकास के साथ–साथ नयी–नयी प्रविधियों की खोज हुई और माध्यम का क्षेत्र भी असीमित हो गया। राजा रवि वर्मा तथा कम्पनी शैली के साथ तैल रंगों का प्रचार भारत में प्रारम्भ हो गया और आज तो कम्पनियों ने इतने अधिक रंग, शेड तथा माध्यम बना दिए हैं जिससे कलाकार जैसा चाहे वैसा प्रभाव प्रस्तुत करने में समर्थ हैं। प्राचीन समय में सीमित साधनों के कारण कलाकारों ने जो रंग लगाए वह वातावरणीय प्रभाव प्रस्तुत करने में समर्थ हैं। प्राचीन समय में सीमित साधनों के कारण कलाकारों ने जो रंग लगाए वह वातावरणीय प्रभाव के कारण कुछ धूमिल पड़ गए हैं किन्तु आज इस क्षेत्र में नए–नए प्रयोग हो रहें हैं जिससे रंगों को स्थायी बनाया जा सके। आज चित्र में विषय की तुलना में तकनीक की विविधता प्रमुख है जिसके लिए कहीं कलाकारों ने कोमल तूलिका संघातों और और कहीं गाढे रंग से चपटे तूलिका संघातों को लगाकर चित्रण किया है। कहीं तैल और एक्रेलिक का एक साथ प्रयोग किया है और कहीं रंगों को बहाकर या उसमें कुछ सामग्री मिलाकर कार्य किया है। प्रयोग के क्षेत्र में नवीनता हेतु कलाकारों ने विभिन्न माध्यमों को मिलाकर मिश्रित माध्यमों के रूप में भी प्रयोग किया है।

कला एवं संस्कृति के जन्म एवं सम्बंध के सन्दर्भ में एक बहुत ही जटिल प्रश्न समक्ष आता है। कलाकार ने संस्कृति को जन्म दिया या मानव ने पहले संस्कृति की परम्परा सुरक्षित की और तत्पश्चात् कला रचना का प्रारम्भ हुआ। वैसे मानव जन्म के विकास के साथ ही साथ संस्कृति के जन्म एवं विकास की परम्परा आदि काल से दिखाई देने लगती है जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण शिलाओं पर उत्कीर्ण रचनाकृतियाँ हैं। सौंदर्यपूर्ण रचनाकृतियों से ही मानव संस्कारशील बना। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों के सुन्दर नगर तत्कालीन संस्कारशील मानव का ही प्रतिबिम्ब हैं। कला चूँकि प्रारम्भ से ही धर्म से प्रेरणा लेती रही है। अतः धर्म संस्कृति के निर्माण में एक महत्वपूर्ण

भूमिका निभाता रहा है। इस्लामी संस्कृति के प्रतीक रूप में मुगल सम्राटों द्वारा निर्मित विविध भवन एंव प्रसाद, हिन्दु संस्कृति के प्रतीक विविध मन्दिर, जैन संस्कषति के प्रतीक धार्मिक चित्र सभी प्रदर्शित करते हैं कि इन रचनाओं में कलाकरों ने अपनी संस्कृति की छाप छोड़ी है।

आरम्भ से पूर्व तथा पश्चिम दोनों ही देशों की दृष्टि में कला एक विशिष्ट प्रक्रिया थी जिसके पार्श्व मे कलाकरों का समृद्ध कौशल निहित था। समय के बहते परिवर्ततन के साथ कला शिल्प के दायरे से बाहर आकर विशिष्ट अभिव्यक्ति बन गयी और विभेदीय बन्धनों से मुक्त होकर सहृदयी कलाकार को बाध्य करने लगी– एक नवीन आवरण से आच्छादित होकर विचार करने के लिए। २१वीं शताब्दी से पूर्व प्रारम्भ से कलाकारों ने समय–समय पर विविध शैलियों में रंगों, रूपाकारों का विषयानुसार प्रयोग किया है किन्तु इन तत्वों के माध्यम से experiments न करके खोज की है। इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि प्रयोगधर्मिता कलाकार की व्यक्तिगत भावनाओं एवं संवेगों की अभिव्यक्त क्रीड़ा मात्र ही नहीं, कला जगत में एक नवीन अध्याय का विस्तार भी है। सार्वभौमिकता, समूहीकरण, सामुदायिक अभिव्यक्ति में कलाकार की वैयक्तिक अभिव्यंजना गतिशील नहीं बन पाती। कलाकर की आत्मिक संवेदना ही उसे सृजनात्मक प्रयोगों की ओर अग्रसर करती है और २१वीं शताब्दी की दृश्य कला ही सृजनशील प्रवृत्तियों, आत्मीय भावों, कलात्मक कल्पना वर्णों की क्रीड़ा संवेगों की गूढ़ता, तकनीक की विशिष्ट्ता आदि नव्य प्रवत्तियों, से सम्बद्ध होकर कलाकार की तूलिका को पूर्णतः स्वतन्त्र करती है– आत्माभिव्यन्जना हेतु जिससे कलाकार का उद्धेश्य पूर्णतः अन्तःकरण की रागात्मक भावना के परितोश पर केन्द्रित हो जाता है। आज कला जगत में एक नवीन बदलाव आया है जिसके वितान तले कलाकार अपनी संवेदना रूपी तूलिका को नये–नये प्रयोगों में निमग्न करते हुए अभिव्यक्ति के आन्तरिक सौंदर्य पर केन्द्रित हो गये हैं। प्रयोगशीलता एवं क्रियाशीलता के इस क्षेत्र में कुछ नवीन शब्दों से साक्षात्कार होता है। जैसे ''मूड, शॉर्टकट, प्रोडक्शन, एप्रोच आदि'' यदि आज का कलाकार इन अंग्रेजी शब्दों की सीमा रेखा में स्वयं को बाँध लेता है तो कलात्मकता जड़ बन जाती है और यह भी सत्य है कि 'मूड' के आधार पर 'शार्टकट' में 'प्रोडक्शन' करना कला नहीं है– किन्तु इन शब्दों को हम पूर्णतः आज

की कला से निकाल भी नहीं सकते क्योंकि इन्हीं के आधार पर आज बहुत से कलाकार प्रयोगों की श्रंखला को निरन्तर अग्रसर कर रहे हैं।[1]

प्रारम्भिक युग में विकासशील मानव कला रचना के साथ–साथ उपकरणों के निर्माण का कार्य भी स्वंय करता था किन्तु आज साधनों और माध्यमों का व्यापारिक स्तर पर निर्माण होने के कारण पर्याप्त संभावनाएँ दिखाई दे रही हैं। यही कारण है कि आज कलाकार माध्यमों एवं उपकरणों का रूढ़िबद्ध प्रयोग नहीं करता क्योंकि कलाकारों का यह मानना है कि यदि विषय तथा नियमों में बँध कर वह कार्य करता है तो उसकी भावनाएँ और संवेग गौण हो जाते हैं।[2] इन भावनाओं और संवेगों की प्रमुखता के कारण कलाकार कलात्मक प्रयोगों को करते हुए निरन्तर अग्रसर हैं जिसके अन्तर्गत कलाकार कहीं कोमल तूलिका संघातों, कहीं गाढ़े रंगों को ''स्पैटुला'' से लगाकर, कहीं रंगों को बहा कर तो कहीं एक साथ विविध माध्यमों को लगाकर ''मिक्स्ड मीडिया'' में कार्य कर रहे हैं। वानआइक बन्धुओं द्वारा प्रयोग करते हुए जिन तैल रंगों का आविष्कार हुआ। आज वह एक सुदीर्घ परम्परा को पार कर Refined Form में कलाकारों को प्रेरणा दे रहे हैं। इन रंगों द्वारा किए गए प्रत्येक प्रयोग की 'एप्रोज' में अन्तर है। कहीं–कहीं इसे किञ्चत् उष्ण मोम के साथ मिलाकर भी प्रयुक्त किया गया है जिसे ''एनकॉस्टिक'' कहा गया जिसमें रामकुमार शान्ति देव, जी0आर0 सन्तोश आदि के प्रयोग विशेष सराहनीय हैं। बड़ौदा के भी कलाकारों ने एनकॉस्टिक'' के क्षेत्र में विविध प्रयोग किए। रामकुमार ने बहुत से चित्रों में मोम तथा स्याही का प्रयोग किया।[3] धरातल को मोम से कवर करके तत्पश्चात् तूलिका से रूपों को स्पष्ट किया। जौन मीरों ने प्रिन्ट्स पेपर, कोलाज तथा असेम्बलेज के माध्यम से नए–नए प्रयोग किए। मारो, बॉश, आर्य आदि के फंतासी चित्र मात्र एक प्रयोग ही नहीं प्रस्तुत करते वरन् कला जगत को एक नवीन शैली भी प्रदान करते हैं। रणबीर बिष्ठ ने तैल रंगों में चित्रांकन करते समय तारपीन का तेल अधिक मात्रा में प्रयोग करके अपने चित्रों में पारदर्शक प्रभाव की सृष्टि की है। जैसे ''सिटीस्केप'' श्रंखला के चित्र। कुछ चित्रों में इन्होंने स्वाभाविक रूप से रंगों को बहाकर गाढ़े रंगों को सीधे ट्यूब से या नाइफ से लगाया है। दूसरी ओर जेराम पटेल ने लकड़ी जलाकर उसमें छेदों के द्वारा नए रूपाकारों को गढ़ा। पिराजी सागरा ने धातु और कीलों से अपने चित्रों को ''रिलीफ'' सदृश बनाया। कुछ

कलाकारों द्वारा धरातल पर खुरदरा पोत दर्शाने हेतु 'फ्राटेज' को भी अपनाया गया। प्रसिद्ध कलाकार टर्नर ने 'ब्रोकन कलर' के माध्यम से तूलिका संघातों में कार्य कुशलता के साथ विविधता भी दर्शायी। इसी के साथ प्रभाववादियों द्वारा रंग के धब्बों को पास–पास लगाकर चाक्षुश मिश्रण भी प्रयोगधर्मिता के क्षेत्र को विस्तृत करता है।

प्रयोगधर्मिता के इस क्षेत्र में रंगों की धरातल पर अभिव्यंजित क्रीड़ा ही प्रमुख नहीं वरन् क्रियाशील रूपों की संरचना भी महत्वपूर्ण है। उदाहरणार्थ– वेद नायर की मिश्रित माध्यम में बनी कृति कल्पवृक्ष– 2092 जिसमें सूखे पेड़ की टहनियों जैसी आकृतियों से भविष्य के कल्पवृक्ष को दर्शाया है। इस कृति के निर्माण की मानसिकता यह है कि प्राचीन कला भूत तथा वर्तमान पर आधारित थी जबकि आधुनिक कला मात्र वर्तमान की अभिव्यक्ति ही नहीं अपितु वह भविष्य की परिकल्पनाओं को भी पूर्वाभासित कराती है। इसी सन्दर्भ में शुभाप्रसन्न के चारकोल से निर्मित प्रतीकात्मक चित्र, जोगेन चौधरी के जाल से बने नैसर्गिक रूप, गुजराल के कोलाज तथा रिलीफ रूपाकार, बद्रीनारायण की पच्चीकारी, विकास भट्टाचार्य के वास्तु शिल्पीय अभिप्राय आदि किसी को भी प्रयोग की विशिष्ट्ता की दृष्टि से नकारा नहीं जा सकता। आनन्द देव के अनुसार कलाकार को हर समय नयें–नयें प्रयोगों पर अपनी दृष्टि रखनी चाहिए।

1978 ई0 की चौथी त्रिवार्षिकी प्रदर्शनी में आनन्द देव ने कोलाज रचनाकृति में कैनवास पर रोटी को चस्पा कर एक नवीन पद्धति के साथ–साथ कला समालोचकों को एक चर्चा का विषय दिया। इस प्रकार प्रयोगधर्मिता के विविध आयामों का सम्पूर्ण विवरण इतना विस्तृत है कि इसे कुछ शब्दों में परिसीमित नहीं किया जा सकता। विषय को संक्षिप्त करने के लिए कुछ तत्वों को भविष्य में विचार के लिए छोड़ना होगा किन्तु फिर भी एक ऐसी प्रदर्शनी जो बम्बई में हुयी, को यहाँ भुलाया नहीं जा सकता जिसमें किञ्चित् अन्धकार युक्त कक्ष में हल्के बैंगनी प्रकाश में व्यवसायिक उद्धेश्य से चमकदार रंगों से रचनाकृतियों को गढ़ा गया जिसे ''साइकेडेलिक'' कहा गया। इस प्रयोग का उद्धेश्य कलाकारों के लिए नेत्राकर्षण था जैसा पॉप कला में। विज्ञान की प्रगति, कम्प्यूटर का कला जगत में पर्दापण, संचार माध्यमों का विकास, ड़िजीटल फोटोग्राफी आदि दृश्य कलाओं में प्रयोगधर्मिता के

क्षेत्र में कलाकारों को नयी–नयी चुनौतियाँ दे रहे हैं। केवल तीन अक्षर के छोटे शब्द ''प्रयोग'' में न जाने कलाकारों के लिए कितनी संभावनाएँ छिपी हैं जो आज तक कलाकारों ने की हैं और निरन्तर करते रहेंगे और वास्तव में खींची हुई लकीर पर चलने की अपेक्षा एक नयी लकीर खींचना कलाकार का उद्धेश्य होना चाहिए।

सन्दर्भ

1. प्रख्यात कलाकार मनोहर कॉल से की गयी वार्तालाप के आधार पर
2. प्रख्यात कलाकार बिमल दास गुप्त से की गयी वार्तालाप के आधार पर
3. प्रख्यात कलाकार रामकुमार से की गयी वार्तालाप के आधार पर